United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

प्राचीन ज्ञान परंपरा और इतिहास

डॉ. के अनिता
सह प्राध्यापिका,हिंदी विभाग,गायत्री विद्या परिषद कॉलेज का डिग्री ग्रहण भेजो कोर्सेज (ए),विशाखापट्टनम

सारांश (Abstract)

भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम और सुव्यवस्थित बौद्धिक परंपराओं में से एक है। यह परंपरा केवल आध्यात्मिक या धार्मिक चिंतन तक सीमित नहीं रही, बल्कि दर्शन, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, राजनीति, शिक्षा और नैतिक जीवन के बहुआयामी क्षेत्रों में विकसित हुई। वैदिक साहित्य से आरंभ होकर उपनिषदों, महाकाव्यों, शास्त्रों, बौद्ध-जैन दर्शन तथा प्राचीन विश्वविद्यालयों तक यह ज्ञानधारा निरंतर समृद्ध होती रही। औपनिवेशिक हस्तक्षेप के कारण इस परंपरा का संस्थागत क्षरण हुआ, किंतु समकालीन समय में भारतीय ज्ञान प्रणाली (Indian Knowledge System – IKS) के पुनरुत्थान के प्रयास दिखाई देते हैं। प्रस्तुत शोध-पत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा के ऐतिहासिक विकास, दार्शनिक आधार, वैज्ञानिक उपलब्धियों तथा आधुनिक संदर्भ में इसकी प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द (Keywords):वेद, उपनिषद, भारतीय दर्शन, आयुर्वेद, गुरु-शिष्य परंपरा, नालंदा, तक्षशिला, भारतीय ज्ञान प्रणाली

प्रस्तावना (Introduction)

किसी थी सभ्यता या संस्कृति का उत्थान -पतन उसकी आर्थिक स्थिति और राजनैतिक स्थिति नहीं होती बल्कि ज्ञान परंपरा होती है। भारतीय संस्कृति ने हमेशा ही ज्ञान परंपरा को महत्त्व दिया है। भारतीय ज्ञान परंपरा का सबसे बड़ा आधार वेद है। भारतीय ज्ञान परपरा व्यक्त को सामाजिक रूप से सजग, चेतन और जीवंत सक्रियता में ढालती है।भारतीय सभ्यता की विशिष्टता उसकी निरंतर प्रवहमान ज्ञान परंपरा में निहित है। भारतीय चिंतन में ज्ञान का उद्देश्य मात्र सूचना अर्जन नहीं, बल्कि आत्मविकास, सामाजिक समरसता और विश्वकल्याण रहा है। "सा विद्या या विमुक्तये" का सिद्धांत शिक्षा को मुक्ति और आत्मबोध से जोड़ता है। इस परंपरा की ऐतिहासिक यात्रा वैदिक युग से प्रारंभ होकर विभिन्न दार्शनिक, सांस्कृतिक और वैज्ञानिक आयामों से समृद्ध होती हुई आधुनिक काल तक पहुँचती है।

United International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 3048-6726 (UIJMR) Impact Factor: 6.934 (SJIF)
An International Peer-Reviewed and Refereed Multidisciplinary Journal
www.uijmr.in Vol-3, Special Issue-II ,2026

2. वैदिक काल: ज्ञान का आधारभूत स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ें वैदिक साहित्य में निहित हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद को ज्ञान का मूल स्रोत माना गया है। इन ग्रंथों में प्रकृति, ब्रह्मांड, समाज और मानव जीवन के विविध पक्षों का उल्लेख मिलता है। यह भारतीय संस्कृति का मूल आधार है जो ईश्वर, आत्मा, ब्रह्मांड की एकता (ब्रह्म), और नैतिक आचरण (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) का ज्ञान देता है। यह ज्ञान परंपरा अनुभव और ध्यान पर आधारित है, न कि केवल तर्क पर।

2.1 वैदिक दृष्टिकोण

वेदों में प्राकृतिक शक्तियों का मानवीकरण मात्र धार्मिक प्रतीक नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता और पर्यावरणीय संतुलन की चेतना का संकेत है। यज्ञ की संकल्पना सामूहिक सहभागिता और पारिस्थितिक संतुलन से जुड़ी हुई थी।

2.2 वेदांग और ज्ञान-संरक्षण

वेदों की मौखिक परंपरा को सुरक्षित रखने के लिए शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छंद और ज्योतिष जैसे वेदांगों का विकास हुआ। यह तथ्य दर्शाता है कि प्राचीन भारत में ज्ञान के संरक्षण हेतु व्यवस्थित भाषिक और वैज्ञानिक उपकरण विकसित किए गए थे। विशेष रूप से पाणिनि का व्याकरण भाषावैज्ञानिक विश्लेषण की उत्कृष्ट मिसाल है।

3. उपनिषद और दार्शनिक गहराई

उपनिषद भारतीय दर्शन के आधारभूत ग्रंथ हैं, जो वेदों के अंतिम भाग (वेदांत) के रूप में आत्मा, ब्रह्म, और ज्ञान के रहस्यों का उद्घाटन करते । ब्रह्म और आत्मा की एकता, कर्म-सिद्धांत, पुनर्जन्म और मोक्ष जैसे विचारों ने भारतीय चिंतन को आध्यात्मिक ऊँचाई दी।

3.1 तत्त्वमीमांसा और ज्ञानमीमांसा

उपनिषदों में प्रश्नोत्तर परंपरा के माध्यम से दार्शनिक विमर्श विकसित हुआ। याज्ञवल्क्य, श्वेतकेतु और गार्गी जैसे विद्वानों के संवाद ज्ञान की तर्कपरक परंपरा को दर्शाते हैं।

3.2 षड्दर्शन

भारतीय दर्शन के छह प्रमुख दर्शनों—सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत—ने ज्ञान के विविध आयामों का विश्लेषण किया। न्याय और वैशेषिक ने तर्क और प्रमाण की पद्धति विकसित की, जबकि योग और वेदांत ने आत्मानुभूति पर बल दिया। यह विविधता भारतीय बौद्धिक परंपरा की गहराई को प्रमाणित करती है।

4. महाकाव्य और सामाजिक-नैतिक विमर्श

रामायण और महाभारत केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं, बल्कि सामाजिक आचार-संहिता और नैतिक दर्शन के स्रोत हैं। भगवद्गीता में कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का समन्वित दर्शन प्रस्तुत हुआ, जिसने कर्तव्य और नैतिकता को जीवन के केंद्र में स्थापित किया। भारतीय संदर्भ में रामायण और महाभारत, तथा विश्व साहित्य में गिलगामेश जैसे महाकाव्य,

सामाजिक-सांस्कृतिक ढांचे को मजबूती प्रदान करते हुए धर्म, नैतिकता, और व्यक्तिगत आचरण (सत्य, सम्मान, न्याय) की शिक्षा देते हैं।महाभारत में राजधर्म, न्याय और नीति पर विस्तृत चर्चा मिलती है, जो प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन का आधार है।

5. वैज्ञानिक और शास्त्रीय योगदान

भारतीय विज्ञान और शास्त्रीय परंपरा (Classical Contribution) का इतिहास अत्यंत समृद्ध है, जो शून्य के आविष्कार, दशमलव प्रणाली, ज्यामिति, खगोल विज्ञान (आर्यभट्ट), और चिकित्सा (सुश्रुत, चरक) के प्राचीन सिद्धांतों से लेकर आधुनिक अंतरिक्ष और परमाणु अनुसंधान (कलाम, रमन) तक फैला है।भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यह केवल आध्यात्मिक चिंतन तक सीमित नहीं रही, बल्कि वैज्ञानिक क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय योगदान दिया।

5.1 आयुर्वेद और चिकित्सा

चरक संहिता और सुश्रुत संहिता में चिकित्सा विज्ञान का सुव्यवस्थित वर्णन मिलता है। शरीररचना, औषधि-विज्ञान, शल्य-चिकित्सा और रोग-निदान की वैज्ञानिक पद्धतियाँ विकसित की गई थीं। आयुर्वेद की त्रिदोष सिद्धांत (वात, पित्त, कफ) स्वास्थ्य की समग्र अवधारणा प्रस्तुत करता है।

5.2 गणित और खगोलशास्त्र

आर्यभट्ट ने शून्य और दशमलव पद्धति को विकसित किया तथा ग्रह-गति की गणना प्रस्तुत की। भास्कराचार्य और वराहमिहिर ने खगोल और गणित को उन्नत स्तर तक पहुँचाया। भारतीय गणितीय पद्धति ने विश्व गणित के विकास को प्रभावित किया।

5.3 राजनीति और अर्थशास्त्र

कौटिल्य का अर्थशास्त्र प्रशासन, कूटनीति, आर्थिक प्रबंधन और राज्यसुरक्षा का संगठित ग्रंथ है। इसमें शासन को नैतिक और व्यावहारिक दोनों दृष्टियों से समझाया गया है।

6. बौद्ध और जैन परंपरा का योगदान

बौद्ध और जैन दर्शन ने भारतीय ज्ञान परंपरा को तार्किक और नैतिक दृष्टि से समृद्ध किया। बौद्ध तर्कशास्त्र, विशेषकर नागार्जुन और धर्मकीर्ति के विचार, ज्ञानमीमांसा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं। जैन दर्शन का अनेकांतवाद बहुलतावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो सहिष्णुता और बौद्धिक उदारता को प्रोत्साहित करता है।

7. शिक्षा पद्धति और प्राचीन विश्वविद्यालय

भारतीय शिक्षा प्रणाली का आधार गुरु-शिष्य परंपरा थी। शिक्षा आवासीय और व्यक्तित्व-केंद्रित होती थी। गुरु-शिष्य परंपरा के तहत ज्ञान मौखिक होता था, और शिक्षा प्रकृति के करीब आश्रमों में दी जाती थी। प्रमुख केंद्रों में नालंदा, तक्षशिला और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालय शामिल थे, जो दुनिया भर के छात्रों को आकर्षित करते थे।नालंदा, तक्षशिला और

विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों में दर्शन, चिकित्सा, व्याकरण, गणित और बौद्ध अध्ययन पढ़ाए जाते थे।नालंदा में अंतरराष्ट्रीय छात्र आते थे, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठित थी।

8. औपनिवेशिक काल और ज्ञान-संरचना का परिवर्तन

ब्रिटिश शासन के दौरान पारंपरिक शिक्षा प्रणाली को व्यवस्थित रूप से प्रतिस्थापित किया गया। मैकाले की शिक्षा नीति ने पश्चिमी मॉडल को प्राथमिकता दी, जिससे भारतीय भाषाओं और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों का अवमूल्यन हुआ। परिणामस्वरूप, ज्ञान की स्वदेशी संरचना कमजोर पड़ी।

9. आधुनिक पुनरुत्थान और भारतीय ज्ञान प्रणाली (IKS)

समकालीन भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा प्रणाली में पुनर्स्थापित करने का प्रयास किया है। AICTE तथा अन्य शैक्षिक संस्थानों द्वारा IKS कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। योग, आयुर्वेद, पर्यावरणीय संतुलन और नैतिक शिक्षा को आधुनिक संदर्भ में पुनर्परिभाषित किया जा रहा है। शिक्षा मंत्रालय के IKS प्रभाग के माध्यम से, यह पहल ज्ञान के विऔपनिवेशीकरण (decolonization) और सतत विकास के लिए पारंपरिक भारतीय ज्ञान के प्रयोग को बढ़ावा देती है।

10. समकालीन प्रासंगिकता

आज के वैश्विक संकट—पर्यावरणीय असंतुलन, मानसिक तनाव, नैतिक पतन—के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की उपयोगिता पुनः स्पष्ट होती है। यह ऐतिहासिक विरासत समकालीन दौर में मानसिक तनाव प्रबंधन, टिकाऊ विकास, नैतिक नेतृत्व (कौटिल्य) और योग जैसी विधाओं के माध्यम से अत्यंत प्रासंगिक और व्यावहारिक समाधान प्रदान करती है।

11. निष्कर्ष

भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा इतिहास की स्थिर विरासत नहीं, बल्कि जीवंत और गतिशील बौद्धिक परंपरा है। इसकी विशेषता समग्रता, नैतिकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का संतुलित समन्वय है। आधुनिक शिक्षा और शोध में इस परंपरा का समावेश न केवल सांस्कृतिक आत्मविश्वास को सुदृढ़ करेगा, बल्कि वैश्विक ज्ञान-परिदृश्य को भी समृद्ध करेगा। भारतीय ज्ञान की यह परंपरा हर पीढी केलिए प्रेरणास्त्रोत रहेंगी। इसकी गहराई और व्यापकता आज भी अध्ययन और अनुसंधान का विषय है।

संदर्भ ग्रंथ (References)

राधाकृष्णन, एस. (अनु.). भारतीय दर्शन। नई दिल्ली: राजपाल एंड संस।

दासगुप्त, सुरेन्द्रनाथ। भारतीय दर्शन का इतिहास। वाराणसी: चौखम्बा विद्या भवन।
गीता प्रेस। श्रीमद्भगवद्गीता। गोरखपुर: गीता प्रेस।
अल्तेकर, ए. एस. (अनु.)। प्राचीन भारत की शिक्षा पद्धति। नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
सिंह, आर. के. भारतीय ज्ञान परंपरा। नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।